प्रवासी हिन्दी कविताओं में अभिव्यंजित प्रेम – भावना

डॉ. अनुपमा तिवारी
असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी
अलायंस विश्वविद्यालय बंगलूरू
मो. 8142623426, 8886995593
ईमेल – anupama.tiwari@alliance.edu.in

कवि अपनी प्रतिभा एवं व्युत्पत्ति के बल पर एक अलग भाव - जगत की सृष्टि करता है। सुंदर एवं सरस वाणी के परिधान में वही भाव - जगत कविता का रूप धारण करती है। जिसका भाव – जगत जितना सुंदर एवं मनोज्ञ बन पड़ता है वह कवि उतना श्रेष्ठ माना जाता है। कवि की अंतः चेतना के लिए कुछ भी अगोचर तथा अज्ञात नहीं रह जाता। इसी क्षमता के कारण कवि अपनी सुंदर एवं सशक्त वाणी में उसी भाव जगत को व्यक्त करता है जिसे हम कविता का नाम देते हैं। कविता शब्द परिधान धारण करने से पूर्व भावनाओं के रूप में कवि के अंतस्तल में प्रतिष्ठित होती है। यही भावना शक्ति कवि को साधारण व्यक्ति से पृथक का स्थान देती है। भावतत्व के अभाव में साहित्य निष्प्राण हो जाता है। सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर जब कलाकार उच्च भावभूमि पर स्थित आनंदमय भावों को अपने हृदय में पाता है और उन्हें अपने काव्य में प्रकट करता है तब वे पाठक और श्रोता के हृदय को आनंद मग्न कर देते हैं। प्रवासी हिंदी कविताओं में कवियों ने उच्च कोटि सात्विक एवं पुनीत प्रेम भावना को विविध रूपों में व्यक्त किया है। सृष्टि के विकास में योग देने वाली अत्यंत सहज एवं सशक्त प्रवृत्ति प्रेम - भावना है। यह भावना चेतनामय प्राणियों में प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहती है। यही भावना मानवीय चेतना को विकास के अनंत आयाम प्रदान करती है। समस्त कलाओं में प्रेम भावना की अभिव्यक्ति अत्यधिक मात्रा में पाई जाती है। प्रचलित भाषा में इसी रागतत्व को प्रेम कहा जाता है। जिसमें यह प्रेम तत्व क्रियाशील नहीं होता वह चेतन नहीं माना जा सकता। प्रेम वह अद्भुत शक्ति और निमित्त है जो चराचर जगत के किसी भी प्राणी में सकारात्मक सोच , नई ऊर्जा, सौहार्द्रता एवं सौमनस्यता का संचार करती है। कटुता का निषेध करती है। जीवन के उद्देश्य को उल्लासमय बनाती है। प्रेम वह घूंटी है जो हमें सद्व्यवहार करना सिखाती है, प्रकृति से, जड – चेतन से एकालाप करने का मार्ग बताती है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के शब्दों में "एक दूसरे की ओर आकर्षित दो हृदय के योग से जीवन में एक नया रस उत्पन्न हो जाता है या दूनी सजीवता आ जाती है। आनंद की संभावना भी बहुत अधिक बढ़ जाती है और दुख की भी। प्रिय के हृदय का आनंद प्रेमी के हृदय का आनंद हो जाता है। अतः एक ओर तो प्रिय के आनंद के मेल हो जाने से प्रेमी संसार की नाना वस्तुओं में कई गुने अधिक आनंद का अनुभव करने लगता है। दूसरी ओर प्रिय के अभाव में उन्हीं वस्तुओं में उसके लिए आनंद कम या कुछ भी नहीं रह जाता । प्रिय के आनंद में ही वह अपना आनंद ढूंढा करता है। दो हृदयों की यह अभिन्नता अखिल जीवन की एकता के अनुभव के पथ के द्वार हैं। प्रेम का यह एक रहस्यपूर्ण महत्व है। प्रेम का प्रभाव एकांत भी होता है और लोकजीवन के नाना क्षेत्रों में भी दिखाई पड़ता है।"**1** इसमें कोई संदेह नहीं कि समस्त सृष्टि के मूल में प्रेम एक प्राण तत्व के रूप में प्रतिष्ठित है। प्रेम की अनुभूति से ही आत्मा का उन्मीलन होता है। प्रेम एक उदात्त अनुभूति है इसके स्वरूप का विश्लेषण आत्मतत्व को आधार बनाकर किया जा सकता है। प्रेम और वासना एक नहीं है। वर्तमान युग में प्रेम और काम को पार्थक्य करने में लोगों को भ्रमित होते देखा जाता है। प्रेम विशुद्ध तथा पवित्र होता है। काम में स्वार्थ निहित रहता है। काम का परिणाम क्षणिक उल्लास है तो प्रेम का परिणाम सात्विक आनंद है। प्रवासी हिंदी कवियों ने अपनी कविताओं में प्रेम की उदात्त भावना को अभिव्यक्ति दी है। प्रेम के दोनों पक्ष संयोग और वियोग में जहाँ वियोग को कवियों ने अधिक प्राथमिकता दी है प्रवासी कवियों ने भी वियोग को ही अधिक संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत किया है। नॉर्वे के कवि सुरेश चंद्र शुक्ल ने अपनी कविता 'प्रेम नहीं मरता है' में लिखा है कि -

तुम अपने प्रेम को छिपाते हो। जैसे आकाश छिपाता है सितारे।
न ही प्रेम मरता है न ही मेरे शब्द / मरकर एक जीवन होता है समान /
जन्म से शुरू होता है नया जीवन। / मेरे मरने के बाद मेरे गीतों में रहेंगे अहसास
न होकर भी होंगे तुम्हारे पास। / जब तुम्हारे होठों पर तैरेंगे /
गुनगुनाए जाएंगे मेरे गीत /किसी से प्रेम का नाता जोड़ेंगे - तोडेंगे
मेरे गीत भी एक बार फिर, तुम्हारे साथ - साथ जिएंगे।
समाज के अमृत और जहर / साथ - साथ पिएंगे।

हम नहीं होंगे / पर हमारे सपने तुम्हारे साथ रहेंगे ।2

व्यवहारिक जगत में प्रिय से प्रेमी के मिलन की अभिलाषा प्रेम कहलाता हैं। प्रेम दो भिन्न ह्रदय को एक स्तर पर लाकर खड़ा कर देता है   इससे वे परस्पर संबद्ध होकर एकात्मकता ग्रहण करते हैं। सच्चा प्रेम कभी मरता नहीं वह एक निष्ठ और एकांतिक होता है। प्रेम किसी भी परिस्थिति में प्रेमी के सानिध्य से विलग नहीं होता। कवियों को तो यह दैवीय आशीर्वाद प्रदत्त है कि वे अपना प्रेम शब्दों में रच कर अमर कर देते हैं। शरद आलोक ने भी इसी भाव को व्यंजित किया है कि आत्मिक रूप से सदा - सदा के लिए वे प्रियतमा के साथ ही रहेंगे। समाज में लगाए गए प्रतिबंधों को एक साथ मिलकर सुलझाएंगे यदि समाधान न भी मिल पाये और अंततः मृत्यु का भी वरण करना पड़े तो वह भी सहर्ष स्वीकार है क्योंकि शरीर न होने पर भी कवि की आत्मा उसकी कविता के बोल जब भी होंठों पर दुहराए जाएंगे उनका प्रेम अमर रहेगा। कवि का हृदय प्रेम का रसकोश होता है। जब साधारण प्रेमी एक दूसरे के प्रति प्रेमातुर हो जाते हैं वहीं कवि का प्रेम चाहे वह कविता के बोल से हो या फिर परमात्मा से हो या प्रेयसी से हो, वह उसे अपनी सर्जना का संबल मानते हैं। इसी संदर्भ में सूरीनाम की पुष्पिता अवस्थी ने लिखा कि –   शब्दों से अधिक ताकत होती है - शब्दों की आवाज में

आवाज से बनती है शब्दों की ताकत
तुम्हारे शब्दों से अधिक विश्वास है - तुम्हारी आवाज मे
ध्वनित होती है उसमें तुम्हारी आत्मा
जितनी बार सुनती हूँ - तुम्हारी आवाज
महसूस करती हूँ खुद को - तुम्हारी आवाज के कोटर में
तुम्हारी आवाज में तुम्हारी आत्मा के शब्द हैं
तुम्हारे चैतन्य के चेतस तत्व मेरे चित्त में विलीन हो जाने के लिए। 3

सृष्टि के विकास में योग देने वाली सहज प्रवृत्तियों में प्रेम - भावना एक है। प्रेम का लोप हो जाने पर सृष्टि का अंत हो जाता है। जो अनंत तृप्ति प्रदान करता हो वही प्रेम है। साहित्य में प्रेम के कई रूप अभिव्यक्ति पाते हैं। पुष्पिता जी ने प्रेमी द्वारा कथित अनुरागपूर्ण शब्दों को सर्वाधिक विश्वसनीय और ताकतवर माना है। दो व्यक्तियों के मध्य जहाँ सच्चा अनुराग होता है वहाँ प्रेम भक्ति का स्वरूप प्राप्त कर लेता है। जिस प्रकार आराध्य के स्मरण से चित्त भाव प्रवणता में लिप्त होकर उसी चेतस तत्व में विलीन हो जाना चाहता है कवयित्री के कोमल मन में उपजी प्रणयानुभूति भी प्रेमी की आत्मा में औत्सुक्यता से बहुभावीय एवं बहुकोणीय उड़ान भरने के लिए तत्पर रहता है। विगोपनीयता के साथ कवयित्री की उदात्त भावनाएं सर्वत्र प्रेमी की आवाज में ही सराबोर रहती हैं। कवयित्री की उद्भावनाएं इस बात को स्वीकारती हैं -

एक दूसरे की भाषा में समाकर / हम दोनों मौन हो चुके हैं
अंतरंग संवाद में व्यस्त / प्रणय की रुनझुन में जीते हुए
मन रचने लगा है - सुख की सजल भाषा
संजीवन स्पर्श से रचित / हार्दिकता से संपूर्ण
अपनेपन के रचाव के लिए ।4

सात्विक प्रेम में कृत्रिमता का के लिए स्थान नहीं रहता क्योंकि इसमें मान देने वाले के प्रति राग नहीं होता और न ही अपमान करने वाले के प्रति द्वेष होता है। प्रेमी युगल को भावोद्वेग के कारण समूची दुनिया ही निर्दोष दिखाई देती है । कवयित्री पुष्पिता अवस्थी ने भी उपर्युक्त विवेचित पंक्तियों में इसी बात की पुष्टि की है कि जब दो भिन्न हृदय सहजगम्यता से एक दूसरे के अंतर्मन में विलुप्त हो जाते हैं तो वहाँ प्रेम की अंतरंगता संवाद मौन रूप से मुखर अभिव्यक्ति पाती हैं। अपनेपन व साधिकार का वह संजीवन संस्पर्श इतना सुखदायी होता है कि उस अनुभूति को व्यक्त करने के लिए शब्द अपर्याप्त होते हैं। वास्तव में प्रेम का अर्थ पाना नहीं बल्कि उसमें रम जाना या खो जाना है। यह एक ऐसा प्रवाह है जो अबाध गति से हृदय को स्पंदित करते हुए प्रवाहित होता रहता है शांत, निर्मल, कोमल और ईश्वरीय अनुभूति की तरह । कवयित्री की यह पुनीत भावना प्रेम की उत्तुंग पराकाष्ठा से विचरते हुए समुद्रसमशील हृदय में विश्रांत पाना चाहता है। मिलन के उस स्थल पर कवयित्री की भाव संवेदना किसी भी पाठक के हृदय को स्पंदित करने में अद्वितीय सामर्थ्य रखती है। भावुक पुष्पिता जी ने स्पष्ट किया है कि आध्यात्मिक दृष्टि या फिर सांसारिक प्रेम में - प्रेमी के कोमल चिंतन सहज स्वभाव से मिश्रित होकर मैं - आप और आप मैं बन जाने के पूर्ण भाव प्रवाह में एक मूर्तरूप धारण करने के लिए आतुर होते हैं। प्रेम के संसार में सभी आवेष्टित रहस्यों का अनावरण कर अपने

आराध्य (प्रेमी) के रंग में रच - बस जाने की उत्कंठा ही इसे भाव प्रबल बनाती है। कवि मोहन राणा ने अपनी कुछ कविताओं में प्रेम के इसी प्रतीक्षापूर्ण भाव को अभिव्यक्ति दी है जो इस प्रकार है –

सवाल नहीं आज सुनकर / उठता सवाल इस बात पर
अब आकाश को नहीं मैं ताकता पैरों को घूरता हूँ
मुझे करनी थी प्रतीक्षा उनकी इस पल यहीं
यहीं इस खुशी में इस क्रोध में इस उदासीन समय की करवट में
यह खरोंच उंगली पर धीमे से धड़कती पीड़ा उसके आसपास
चला तो नहीं गया मैं कहीं और आकाश को ताकते
मेरी अपनी छाया गुम है इस एकाएक जवाब पर
सवाल नहीं आज अपने पैरों को घूरते
इस कोलाहल के वीराने लगता है अपनी साँस से भी डर
साधे रहता हूँ उसे आशा की तरह अपनी मुस्कान में। 5

यह सर्वविदित है कि किसी भी वस्तु या व्यक्ति के महत्व का आभास हमें तब होता है जब हम उससे विलग हो जाते हैं। कवि मोहन राणा के प्रस्फुटित उद्गार विवेचित पंक्तियों में द्रष्टव्य हैं। प्रेयसी से विलग होकर कवि का भावुक मन अधीर हो उठता है और एकांत में हो, स्वयं से प्रश्नालाप शैली में कवि वार्तालाप करते हैं। एक तरफ जहाँ कवि यह स्वीकारते हैं कि प्रेम अनंत होता है उसे अनुभव किया जाता है न कि धाक जमाकर या दबाव डालकर प्राप्त किया जाता है। वहीं दूसरे ही क्षण उनका मन बाल स्वभाव स्वरूप हो जाता है और स्वयं को दोषी मानकर इस तथ्य का समर्थन करने लगते हैं कि प्रतीक्षा का फल तो सुखमय होता है अतः कवि को भी प्रतीक्षा करनी चाहिए । कवि को इस बात पर भी पश्चाताप है कि - प्रेम के अस्तित्व को तलाशते - तलाशते उससे कहीं भूल तो नहीं हो गई और वह सच्चे प्रेम की आश में गलत रास्ते पर भटक गया हो। एक बार प्रेम में स्वयं के गलती का आभास हो जाता है तो अधीर मन अनावश्यक तर्क के व्यूह में फंसकर घुंट-घुंटकर जीवन जीने के लिए अभिशप्त हो जाता है। पुरानी स्मृतियाँ उसके मन को कचोटती रहती हैं, परंतु मनुष्य का आशावादी स्वभाव उसके जिजीविषा की वृद्धि करता है। वियोग की दशा में एक ओर जहां कवि का मन कोलाहल में भी स्वयं को एकाकीवस्था की परिधि में पाता है, वहीं मिलन की आश को वह संजोए रहता है। पुनीत प्रेम समानता का प्रतिनिधित्व करता है।

मॉरीशस के राज हीरामन जी का मन प्रेम के रंग में इस प्रकार रंगा हुआ है कि उनके जीवन का उद्देश्य प्रेयसी के ईर्द - गिर्द रहकर ही पूर्ण होता है। प्रियतमा के अप्रतिम सौंदर्य से आकर्षित होकर कवि का संवेदनशील मन इस प्रकार विचलित होने लगता है कि उसे अपने प्रत्येक कार्य का शुभारंभ और अंत प्रेमिका की खुशी में ही प्राप्त होती है। कवि को इस बात से संतुष्टि है कि प्रेम के कठिन मार्ग पर भले ही वह अथक निरंतर चलता रहा हो परंतु प्रेयसी को पाने की अभिलाषा सदैव उसकी ताकत बनी रही। अतः यह यात्रा कभी बोझिल या कष्टकर नहीं लगी। प्रेम के रस में जो एक बार स्वयं को लिप्त कर लेता है उसे विश्व का कोई भी सुख सारहीन ही लगता है। अतः फीजी के कवि जोगिन्द्र सिंह कंवल ने इस संदर्भ में लिखा कि -

क्यों नहीं एक बार / केवल एक बार
अपनी लहरों में लौटकर / मुझे उन गहराइयों में डुबो देते
जहाँ से मैं कभी भी बाहर न निकल सकूँ।
अगर निकलूँ तो इतना भीग कर / कि अगले सात जन्मों तक
कभी किसी के पास / प्यास की शिकायत न करूँ। 6

विवेच्य पंक्तियों में कवि ने प्रेम की पिपासा को व्यक्त किया है तथा प्रेयसी से अभ्यर्थना करते हैं कि उसे प्राप्त करने की कवि की कामना कभी घटने वाली नहीं है अतः क्यों न मात्र एक बार प्रेम की निर्झरिणी में इस प्रकार तिरोहित कर दे कि बाहर निकलने पर कवि की कोई आशा ही शेष न रह पाए। उलाहना का क्रम ही टूट जाये और कवि का जीवन सदा के लिए रमणीय बन जाए। प्रेम की पिपासा सहजता से बुझायी नहीं जा सकती। जितनी गहराई में उतरते हैं मन उतना ही चंचल होता जाता है और तृष्णा के भाव बढ़ते ही जाते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से इसे देखें तो अभिप्राय है कि कवि अपने आराध्य देव से करबद्ध निवेदन करता है कि वह जीवन की आपाधापी से इतना त्रस्त हो चुका है कि उसे अब किसी बात की लालसा ही नहीं रह गई। क्यों न ईश भक्ति

ISSN : 2583-2948

के सागर में इतनी गहराई से डुबों दें कि पुनः वह मिथ्याडंबरयुक्त समाज के गर्त में आ ही न सके और यदि आना संभव हो भी जाए तो मन प्रभु के प्रेम रस में इतना पगा रहे कि शेष कोई अभिलाषा ही न बचे , क्योंकि प्रेम चाहे दो व्यक्तियों के मध्य हो या भक्त और भगवान के बीच, वह सदैव मन्दाकिनी के सदृश पावन ही होता है।

प्रेम अपरोक्ष आत्मा को परमात्मा से जोड़ें रखता है। प्रेम के संदर्भ में एक अन्य उदाहरण प्रस्तुत है -

फट रहे हैं पुराने कागज / स्याही भी उड़ती जा रही
हो गए सब शब्द धुंधले / समय की धूल अक्षर खा रही
इस बात का मुझे गम नहीं / कि मैं इन्हें पढ़ सकता नहीं
क्योंकि तेरे हाथों की खुशबू / आज भी हर खत से आ रही। 7

इन पंक्तियों में कवि ने प्रियतमा के और अपने प्रेम की पराकाष्ठा को चिरकालीन बताते हुए उसे स्थायित्व का प्रमाणपत्र दिया है। अर्थात समय चक्र भले ही निर्बाध गति से बढ़ता रहे परंतु प्रेयसी के साथ बिताया गया स्वर्णिम व मधुर पल कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता। प्रेम का प्रतीक पत्र भी होता है। प्रेम की सम्पदा को विपुल बनाने हेतु , स्मृति में लिखे गए प्रेम पत्र के एक एक शब्द इतने प्रभावी होते हैं कि वह लंबे समय तक हृदय में संचित रहते हैं। पुराने पड़े पत्र के अक्षर भले ही धुंधले हो जाए शब्द कम पहचान में आयें परंतु जिस उत्तेजना और मादकता में वे अक्षर शब्दों में ढल कर एक मूर्त रूप प्राप्त किए थे उनका वह जीवंत रूप सदैव अमर रहेगा क्योंकि प्रेयसी के कोमल कर से जो अक्षर गढे जाते हैं उनकी असीम खुशबू सदैव विद्यमान होती है।अर्थात प्रेम की नवीनता हमेशा पत्र मे परिलक्षित होती है। इस प्रकार विवेच्य कविताओं के अध्ययन से स्पष्ट हुआ है कि प्रवासी हिन्दी कवियों ने अपनी कविताओं में प्रेम सम्बन्धी भावनाओं को जिस प्रकार से अभिव्यक्ति दी है , वे वर्तमान समय में व्याप्त प्रेम के नाम पर प्रपंच – छद्म , अभद्रता , अश्लीलता , कामुकता एवं स्वार्थ से विमुक्त हैं। प्रेम के दोनो पक्ष (संयोग और वियोग) को कवियों ने कविताओं में स्थान दिया है। मॉरिशस के राजहीरामन एवं फीज़ी के जोगिन्दर सिंह कवंल की कुछ कविताओं में प्रेमानुभूतियों की तीव्र अभिव्यंजना परिलक्षित होती है। वहीं मोहन राणा और पुष्पिता अवस्थी जी की कविताएं दार्शनिक व यथार्थपूर्ण विचारों की पुष्टि करती हैं। कुछ कविताएं प्रेयसी या प्रेमी के वियोग से उत्पन्न गहन अवसाद और पीडा के भाव से भी व्यंजित हुई हैं। पुष्पिता अवस्थी और जोगिन्दर सिंह कंवल की कुछ कविताएं प्रेम व आध्यात्म के दोहरे धरातल पर साकार हुई हैं। इन कविताओं की विशेषता यह है कि ये प्रेम के पुनीत और विशुद्ध भाव से परिपूर्ण हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1- रामचन्द्र शुक्ल , चिंतामणि भाग – 1 , पृ. 88-89
2- सुरेशचन्द्र शुक्ल , प्रवासी का अंतर्द्वन्द्व , पृ. 70-71
3- पुष्पिता अवस्थी , गर्भ की उतरन , पृ. 197
4- वही , पृ. 198
5- मोहन राणा , रेत का पुल , पृ. 30
6- जोगिन्दर सिंह कवंल , दर्द अपने – अपने , पृ. 118
7- वही , पृ. 143